The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-3, October-2024
www.theresearchdialogue.com

"मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन"

बलबीर सिंह
शोधार्थी

डा0 धर्मेन्द्र कुमार
प्रोफेसर,
वर्धमान कॉलेज,
बिजनौर।

सारांश

उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों के लिए जीवन कौशल अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, चाहे वे सरकारी संस्थानों में हों या निजी संस्थानों में। ये कौशल प्रभावी संचार, समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता, अनुकूलन क्षमता, और आत्म–प्रबंधन शामिल हैं, जो उनके पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन को संतुलित और सफल बनाने में मदद करते हैं। सरकारी शिक्षकों के लिए धैर्य आवश्यक है क्योंकि संसाधनों की कमी और नौकरशाही प्रक्रियाओं के बीच काम करना होता है। प्रभावी संचार के माध्यम से शिक्षा के महत्व को छात्रों और उनके परिवारों तक पहुँचाना पड़ता है। समस्या समाधान की क्षमता से पाठ्यक्रम की जटिलताएँ और छात्र प्रदर्शन की समस्याओं का समाधान करना पड़ता है। निर्णय लेने की क्षमता नीतियों के अनुसार शैक्षिक निर्णय लेना होता है। आत्म–प्रबंधन के जरिए समय और तनाव का संतुलन बनाए रखना होता है। सहानुभूति और सहनशीलता छात्रों की विविध पृष्ठभूमियों को समझने और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करती है। निजी शिक्षकों के लिए अनुकूलन क्षमता महत्वपूर्ण है क्योंकि शैक्षिक मानक और छात्र अपेक्षाएँ तेजी से बदलती हैं। तकनीकी कौशल नवीनतम शिक्षण विधियों और उपकरणों का उपयोग करने में मदद करता है। समस्या समाधान और निर्णय लेने की क्षमता छात्रों की बदलती जरूरतों के अनुसार पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों में सुधार करने में सहायक होते हैं। शोध अध्ययन में प्राप्त निष्कर्ष – मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी पुरुष शिक्षकों के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर पाया गया, मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी महिला शिक्षकों के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्यशब्द :– उच्च शिक्षा, सरकारी शिक्षक, गैर सरकारी शिक्षक, जीवन कौशल

1. प्रस्तावना –

जीवन कौशल, व्यक्ति के व्यक्तिगत, सामाजिक, और व्यावसायिक जीवन को सफलतापूर्वक जीने के लिए आवश्यक क्षमताओं और योग्यताओं का एक समूह है। यह कौशल शिक्षा के हर स्तर पर आवश्यक होते हैं, विशेषकर उच्च शिक्षा में। उच्च शिक्षा के स्तर पर कार्यरत शिक्षकों, चाहे वे सरकारी हों या गैर सरकारी, के लिए जीवन कौशल का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि वे केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं होते बल्कि विद्यार्थियों के जीवन और भविष्य को भी प्रभावित करते हैं। इस लेख में हम उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी और गैर सरकारी शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन करेंगे और समझेंगे कि यह उनके जीवन और कार्य पर कैसे प्रभाव डालता है।

शिक्षण के पेशे में कार्यरत शिक्षक, चाहे वे सरकारी संस्थानों में हों या गैर सरकारी, को दिन–प्रतिदिन कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जीवन कौशल उन्हें इन चुनौतियों से निपटने में सहायता करते हैं और उन्हें अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन को संतुलित करने में मदद करते हैं। जीवन कौशल में सबसे प्रमुख तत्वों में संचार कौशल, समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता, सहनशीलता, और आत्म–प्रबंधन आते हैं। ये कौशल न केवल शिक्षकों को अपने काम में बेहतर बनाने में मदद करते हैं, बल्कि उनकी व्यक्तिगत संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक होते हैं।

उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी शिक्षकों के संदर्भ में, उनकी भूमिका अत्यधिक जिम्मेदारीपूर्ण होती है। सरकारी संस्थानों में काम करने वाले शिक्षकों को अधिक छात्रों के साथ काम करना पड़ता है और उनके पास सीमित संसाधन होते हैं। इन शिक्षकों के पास जो सबसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल होता है, वह है धैर्य। सरकारी संस्थानों में संसाधनों की कमी, छात्रों की विविधता, और नौकरशाही प्रक्रियाओं के बीच काम करते हुए धैर्य की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, सरकारी शिक्षक अक्सर ऐसे क्षेत्रों में कार्यरत होते हैं जहाँ शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी होती है। ऐसे में, शिक्षकों को प्रभावी संचार कौशल का प्रदर्शन करना पड़ता है ताकि वे छात्रों और उनके परिवारों को शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक कर सकें।

दूसरी ओर, गैर सरकारी संस्थानों में कार्यरत शिक्षक अक्सर प्रतियोगिता और परिणामों के दबाव में काम करते हैं। यह संस्थान अक्सर शिक्षण के लिए नवीनतम तकनीकों और संसाधनों का उपयोग करते हैं, जिससे शिक्षकों को तकनीकी कौशल का भी ज्ञान होना आवश्यक होता है। इसके अलावा, इन शिक्षकों को तेजी से बदलते शैक्षिक मानकों और विद्यार्थियों की उम्मीदों के अनुसार खुद को ढालना पड़ता है। इस प्रकार, उनके लिए अनुकूलन क्षमता एक महत्वपूर्ण जीवन कौशल बन जाता है। उन्हें लगातार अपने ज्ञान और शिक्षण तरीकों को अद्यतन रखना होता है, ताकि वे विद्यार्थियों की बदलती आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

समस्या समाधान की क्षमता भी एक महत्वपूर्ण जीवन कौशल है, जो उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों के लिए आवश्यक है। शिक्षण के दौरान, शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे कि पाठ्यक्रम की जटिलता, छात्रों के प्रदर्शन में गिरावट, या संसाधनों की कमी। सरकारी और गैर सरकारी दोनों प्रकार के शिक्षकों को इन समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए रचनात्मकता और लचीलापन दिखाने की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, उन्हें छात्रों के व्यक्तिगत मुद्दों का भी ध्यान रखना पड़ता है,

जो उनके सीखने की क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। समस्या समाधान की क्षमता न केवल शिक्षकों को उनके पेशे में सफलता दिलाती है, बल्कि उन्हें छात्रों के प्रति अधिक सहानुभूति और संवेदनशील भी बनाती है।

निर्णय लेने की क्षमता भी जीवन कौशल के महत्वपूर्ण घटकों में से एक है। उच्च शिक्षा में शिक्षकों को कई प्रकार के निर्णय लेने होते हैं, चाहे वह पाठ्यक्रम योजना से संबंधित हो, परीक्षा के प्रश्नपत्र तैयार करने का हो, या विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देने का। सरकारी शिक्षकों को नीति और नियमों के अनुसार निर्णय लेना होता है, जबकि गैर सरकारी शिक्षकों को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है, जिससे वे अपनी रचनात्मकता का उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार, उनके निर्णय लेने की प्रक्रिया में विभिन्न कारकों को ध्यान में रखना पड़ता है, जैसे कि संस्थान की नीतियाँ, छात्रों की आवश्यकताएँ, और शैक्षिक उद्देश्य।

आत्म–प्रबंधन भी जीवन कौशल का एक महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षक को अपने समय, ऊर्जा, और तनाव का प्रबंधन करने में सक्षम होना चाहिए। उच्च शिक्षा के स्तर पर शिक्षकों के लिए यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उन्हें न केवल छात्रों को पढ़ाना होता है, बल्कि शोध कार्य, शैक्षिक प्रशासन, और अन्य जिम्मेदारियों का भी निर्वाह करना होता है। सरकारी शिक्षकों को नौकरशाही दबाव और नीतिगत बदलावों का सामना करना पड़ता है, जबकि गैर सरकारी शिक्षकों को संस्थानों के परिणाम–उन्मुख माहौल में काम करना होता है। आत्म–प्रबंधन उन्हें इस तनाव से निपटने में सहायता करता है और उन्हें अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने में सक्षम बनाता है।

सहनशीलता भी शिक्षकों के लिए एक महत्वपूर्ण जीवन कौशल है, खासकर उन शिक्षकों के लिए जो उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। सरकारी संस्थानों में शिक्षकों को विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों के साथ काम करना पड़ता है, जिनके पास भिन्न–भिन्न सीखने की क्षमता और रुचि होती है। उन्हें अपने दृष्टिकोण में लचीलापन और सहनशीलता दिखाने की आवश्यकता होती है, ताकि वे हर छात्र की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। गैर सरकारी शिक्षकों के संदर्भ में, उन्हें संस्थान के लक्ष्यों और विद्यार्थियों की अपेक्षाओं के बीच संतुलन बनाकर चलना पड़ता है। सहनशीलता उन्हें चुनौतियों के बीच भी शांत और सुसंगत बनाए रखती है।

नवाचार और रचनात्मकता भी जीवन कौशल के रूप में महत्वपूर्ण हैं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों को लगातार बदलते पाठ्यक्रम, नई शिक्षण तकनीकों, और विद्यार्थियों की बदलती अपेक्षाओं के साथ तालमेल बिठाना पड़ता है। सरकारी शिक्षकों को अक्सर सीमित संसाधनों के साथ काम करना पड़ता है, जिससे उन्हें अपने शिक्षण में रचनात्मकता और नवाचार का उपयोग करना होता है। वहीं, गैर सरकारी शिक्षकों के लिए यह आवश्यक होता है कि वे अपने शिक्षण में नए–नए दृष्टिकोणों और तकनीकों का उपयोग करें, ताकि वे प्रतिस्पर्धा के माहौल में बने रह सकें।

अंततः, सरकारी और गैर सरकारी शिक्षकों के जीवन कौशल में कुछ मूलभूत समानताएँ हैं, लेकिन उनके कार्यक्षेत्र की प्रकृति और चुनौतियाँ भिन्न–भिन्न होती हैं। सरकारी शिक्षकों को संसाधनों की कमी, नौकरशाही प्रक्रियाओं, और विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों के छात्रों के साथ काम करना पड़ता है,

जबकि गैर सरकारी शिक्षकों को उच्च प्रतिस्पर्धा, विद्यार्थियों की उच्च अपेक्षाओं, और संस्थान की नीतियों के अनुसार काम करना होता है। दोनों प्रकार के शिक्षकों के लिए जीवन कौशल अत्यधिक आवश्यक होते हैं, जो उन्हें अपने पेशे में सफल और व्यक्तिगत जीवन में संतुलित बनाए रखते हैं।

शिक्षण एक ऐसा पेशा है जो निरंतर विकास और सुधार की माँग करता है। जीवन कौशल शिक्षकों को अपने पेशेवर विकास के साथ–साथ व्यक्तिगत संतुलन बनाए रखने में सहायता करते हैं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में, जहाँ विद्यार्थियों की अपेक्षाएँ और चुनौतियाँ अधिक होती हैं, शिक्षकों के लिए जीवन कौशल का महत्व और भी बढ़ जाता है। चाहे वे सरकारी संस्थानों में हों या गैर सरकारी, जीवन कौशल शिक्षकों को न केवल एक बेहतर शिक्षक बनाते हैं, बल्कि एक बेहतर इंसान भी।

2. आवश्यकता एवं महत्व –

उच्च शिक्षा का क्षेत्र जिसमें विश्वविद्यालय और महाविद्यालय शामिल हैंएएक ऐसा परिदृश्य प्रस्तुत करता है जहाँ शिक्षक केवल ज्ञान का प्रसार नहीं करते बल्कि विद्यार्थियों के भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस संदर्भ में जीवन कौशल की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि ये कौशल शिक्षकों को उनके पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाए रखने में सहायता करते हैं। जीवन कौशल वे क्षमताएँ हैं जो व्यक्ति को अपने व्यक्तिगतए सामाजिकए और पेशेवर जीवन को सफलतापूर्वक जीने में मदद करती हैं। ये कौशल केवल तकनीकी ज्ञान तक सीमित नहीं होतेए बल्कि वे समस्याओं को सुलझानेए निर्णय लेनेए आत्म.प्रबंधनए और प्रभावी संचार जैसी क्षमताओं को भी शामिल करते हैं। उच्च शिक्षा मेंए जहाँ शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैए इन जीवन कौशल का महत्व और भी बढ़ जाता है। उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी और गैर सरकारी शिक्षकों के लिए जीवन कौशल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये कौशल न केवल उनके पेशेवर जीवन में सफलता और संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैंए बल्कि उनके व्यक्तिगत जीवन को भी बेहतर बनाते हैं। सरकारी शिक्षकों को जहां संसाधनों की कमी और नौकरशाही प्रक्रियाओं का सामना करना पड़ता हैए वहीं गैर सरकारी शिक्षकों को प्रतिस्पर्धा और तकनीकी परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। जीवन कौशल का अध्ययन और विकास इन दोनों प्रकार के शिक्षकों के लिए अत्यंत आवश्यक हैए ताकि वे अपनी पूरी क्षमता के साथ शिक्षा क्षेत्र में योगदान कर सकें और छात्रों के भविष्य को संवार सकें।

3. प्रस्तुत शोध विषय पर निम्न शोधार्थियों ने शोध किये है –

पार्वती और पिल्लई (2015), चक्र (2016), चौहान (2016), सिंह एवं कुमार आर0 (2022), शर्मा, लता एवं तिवारी (2020) गौड़, रविकान्त (2020) आदि।

4. समस्या कथन –

मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन।

5. शोध अध्ययन के उद्देश्य –

1. मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी पुरुष शिक्षकों के जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन।
2. मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी महिला शिक्षकों के जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन।

6. शोध अध्ययन की परिकल्पनायें –

1. मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी पुरुष शिक्षकों के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी महिला शिक्षकों के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर नहीं है।

7. न्यादर्श –

वर्तमान शोध हेतु मुरादाबाद मण्डल के उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्यापन करने वाले 200 शिक्षक एवं 200 शिक्षिकाओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया जायेगा।

8. शोध विधि –

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

9- उपकरण :–

जीवन कौशल मापनी – डॉ॰ चन्द्र कुमारी एवं आयुष त्रिपाठी द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

10. परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत् सरकारी तथा गैर सरकारी पुरूष शिक्षकों की जीवन कौशल का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

पुरूष शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	100	147.13	2.94	9.04	*
गैर सरकारी	100	143.24	3.14		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 में मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत् सरकारी तथा गैर सरकारी पुरूष शिक्षकों की जीवन कौशल को दर्शाया गया है। तालिका में उच्च शिक्षा में कार्यरत् सरकारी पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन 147.13 एवं 2.94 प्राप्त हुआ है जबकि उच्च शिक्षा में कार्यरत् गैर सरकारी पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 143.24 एवं 3.14 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के

मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 9.04 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से अधिक है। अधिक सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। इससे सिद्ध होता है कि मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत् सरकारी तथा गैर सरकारी पुरूष शिक्षकों की जीवन कौशल में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत् सरकारी तथा गैर सरकारी महिला शिक्षकों की जीवन कौशल का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिला शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	100	146.43	3.40	5.89	*
गैर सरकारी	100	143.78	2.94		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 में मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत् सरकारी तथा गैर सरकारी महिला शिक्षकों की जीवन कौशल को दर्शाया गया है। तालिका में उच्च शिक्षा में कार्यरत् सरकारी महिला शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन 146.43 एवं 3.40 प्राप्त हुआ है जबकि उच्च शिक्षा में कार्यरत् गैर सरकारी महिला शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 143.78 एवं 2.94 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 5.89 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से अधिक है। अधिक सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। इससे सिद्ध होता है कि मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत् सरकारी तथा गैर सरकारी महिला शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

11. निष्कर्ष –

- मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी पुरुष शिक्षकों के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर पाया गया।
- मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी महिला शिक्षकों के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर पाया गया।

12. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

आर0ए0 शर्मा : शिक्षा अनुसंधान, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ 2008।

- **आर.ए. शर्मा :** शिक्षा एवं मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी, आर0लाल0 बुक डिपों मेरठ।
- **भार्गव, महेश (1977)** आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एंव मापन भार्गव प्रकाशन आगरा।
- **मुहम्मद सुलेमान (1995)** शोध प्रणाली विज्ञान पटना, बुक डिपो।
- **शर्मा रामनाथ :** भारतीय शिक्षा दर्शन, अग्रवाल प्रकाशन मेरठ।

THE RESEARCH DIALOGUE
Manifestation Of Perfection

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-3, October-2024
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number Oct.-2024/11
Impact Factor (RPRI-4.73)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

बलबीर सिंह और डा0 डा0 धर्मेन्द्र कुमार

for publication of research paper title

"मुरादाबाद मण्डल में उच्च शिक्षा में कार्यरत सरकारी तथा गैर सरकारी शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-03, Issue-03, Month October, Year-2024.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY